‘राजेश जोशी के साहित्य में सौंदर्यबोध’

संकायमानविकी-

विषय हिन्दी-

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी उपाधि के लिए प्रस्तावित .डी.एच-

शोध प्रारूप-

संकायमानविकी-

विषय हिन्दी-

शोध निर्देशक

डॉ० मुन्ना साह
सहायक प्राचार्य
हिन्दी-विभाग,
मिल्ल्त महाविद्यालय, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

शोधप्रज्ञ :

नबी हुसैन
स्नातकोत्तर हिन्दी
पैट क्रमांक– E2209022
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

कामेश्वरनगर, दरभंगा

प्रस्तावित विषय :– 'राजेश जोशी के साहित्य में सौंदर्यबोध'

प्रस्तावना :–

साहित्य का संबंध सीधे-सीधे मानव जीवन से होता है। मानव जीवन से ऊर्जा ग्रहण कर के ही कोई रचना प्रणीत होती है, जिस प्रकार आधुनिक समय में मानव जीवन पेचीदा होता जा रहा है, उसी प्रकार जीवन से सरोकार रखने वाला साहित्य भी संवेदना तथा संरचना के स्तर पर विस्तार पाता है।

समकालीन साहित्य मानव जीवन से प्रभावित हो कर उसी दिशा में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तरों पर आगे बढ़ती जाती है। समकालीन हिन्दी साहित्य हर सामाजिक पहलू को आत्मसात करती है तथा प्रत्येक स्तर पर सामाजिक विवेचन भी करती है। इस तरह समकालीन साहित्य सामाजिक मूल्यों को सामने रखकर उसका गहन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है।

समकालीन हिन्दी साहित्य हर सामाजिक प्राणी की संवेदनाओं पर चिंतन करता है तथा उन्हें सामाजिक परिप्रेक्ष्य के केंद्र में रखकर मूल्यांकन करने का पूरा प्रयास करता है, साथ ही समकालीन साहित्य बाजारीकरण के दौर में उभोक्तावाद से ऊपर उठ के मानवीय मूल्यों के प्रति सचेत करता है। आज उभोक्तावाद को विकेंद्रीकृत कर मनुष्यता के अंकुरण एवं पल्लवन का दायित्व सचमुच साहित्य पर है। समकालीन साहित्य के प्रमुख रचनाकार राजेश समकालीनता की सभी प्रमुख प्रवृत्तियों से संपन्न रचनाकार हैं।

राजेश जोशी अपनी रचनाओं के माध्यम से मनुष्यता के सुंदर स्वप्नों को उकेरा है। उनकी बौद्धिकता सीमांत अस्मिताओं के लिए प्रतिबद्ध है इसलिए उनका रचनाकर्म आम अवाम

के पक्ष में खड़ा प्रतीत होता है। तीव्र जनाधिकार बोध के कारण राजेश जोशी का लेखन सत्ता संरचना का प्रतिपक्ष प्रतीत होता है।

राजेश जोशी सुदृढ़ जनपक्षधर वैचारिकी के आधार पर सामाजिक द्वंदों को लक्ष्य कर लिखते हैं। इसलिए सामाजिक-राजनीतिक विरोधाभासों को उन्होंने अपनी रचनाओं में बहुत सूक्ष्मता से दर्शाया है। राजेश जोशी ज्ञानात्मक संवेदना और संवेदनात्मक ज्ञान के कुशल शिल्पी हैं, इसी कारण उनका सौंदर्यबोध विलक्षण विस्तार पाता है। उनके सौंदर्यबोध की सबसे बड़ी विशिष्टता यह है कि वह यथास्थिति से उत्पन्न आम जनमानस की विकलता को भी भलीभांति साध सकती है। उनके यहां आंसू पीड़ा भी है, विद्रोह भी, परिवर्तन की आकांक्षा भी है। अतः राजेश जोशी को विशिष्ट सौंदरबोध का साहित्यकार कहा जा सकता है।

यहाँ सौंदर्यबोध के निर्धारक तत्त्वों को रेखांकित करना समीचीन होगा। राजेश जोशी का अपने पूर्ववर्ती और समकालीन रचनाकारों से किन बिंदुओं पर साम्य और वैषम्य है, इसके सूत्र भी उनके सौंदर्यबोध संबंधी प्राथमिकताओं से जुड़े हुए हैं। व्यक्तिनिष्ठ सौंदर्य के धरातल पर तथा वस्तुनिष्ठ सौंदर्य की भावभूमि पर सामाजिक, सांस्कृतिक सजगता से राजेश जोशी के सौंदर्यबोध की निर्मित्ति होती है। इसलिए उनकी रचनाएं समाज के सभी वर्गों की संवेदनाओं को स्पर्श करती हैं। जड़ युगबोध नहीं बल्कि युगीन विकलता का बहुत सघन पाठ उनकी रचनाओं को जीवंत बनाती है। यही कारण है कि उन्होंने लगातार सत्ता से सवाल पूछे। आपातकाल का समाज के प्रत्येक वर्ग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा किंतु युवा वर्ग इसका सर्वाधिक शिकार हुआ। जिनके बनने-संवरने के समय को इमरजेंसी ने लील लिया। राजेश जोशी तत्कालीन युवा वर्ग की पीड़ा को गहरी संवेदनात्मकता से अभिव्यक्त करते हुए एक सार्थक प्रतिरोध रच रहे थे। देश के कथित लोकतंत्र से उनके रचनाकार

का प्रश्न आज भी मौजूं है। राजेश जोशी की रचनाएं कथित औपनिवेशिक आजादी को सम्पूर्ण स्वतंत्रता के रूप में स्वीकार नहीं करतीं।

राजेश जोशी के सामने भोपाल गैस त्रासदी, मेरठ के सांप्रदायिक दंगे जैसी घटनाएं विद्रूप सामाजिक यथार्थ के प्रतीक स्वरूप आती हैं, वे युगीन राजनीति को छद्म आवरणों के बिना देख सकने में भलीभांति समर्थ रहे। बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक स्तरों पर सामाजिक विघटन व विभाजनकारी शक्तियों के उदय को सबसे पहले चिह्नित किया। वह जो स्वप्न था प्रगतिशील उन्नत शोषणरहित समाज का, खंडित हो चुका था। राजेश जोशी के लेखन में इस विखंडन से उपजे मोहभंग की स्पष्ट अनुगूंजें मिलती हैं। उदाहरणस्वरूप उनकी 'मारे जाएंगे' शीर्षक देखी जा सकती है। यह कविता सामाजिक विघटन की परिणतियों का लोमहर्षक चित्रण प्रस्तुत करती है।

प्रत्येक सचेत कवि की भविष्य की अपनी परिकल्पनाएं अवश्य होती हैं। कहना न होगा कि बेहतर समाज की कल्पना कविता की प्रमुख चिंता रही है। राजेश इस प्रश्न को 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' शीर्षक कविता में बहुत विशिष्ट रूप में प्रस्तुत करते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी हमारी व्यवस्था के पास इस सवाल का क्या कोई उत्तर है कि जिन नन्हे कंधों पर स्कूल का बस्ता होना चाहिए उनपर गरीबी का बोझ क्यूं है? व्यवस्था को क्या अधिकार है जन्म लेते ही उसकी नियति निर्धारित कर देने की? लोकतंत्र असंभावना की विराट संभावना की उर्वर भूमि होने के बजाए अवश्यंभावी परिवर्तन में भी क्यों रुकावट बनी हुई है?

यहाँ यह प्रस्तावित किया जा सकता है कि राजेश जोशी के सौंदर्यबोध की निर्मित जनमुक्ति के तंतुओं से होती है। उनके रचना संसार में सौंदर्यबोध भिन्न तरह से परिभाषित होती है। राजेश जोशी का सौंदर्यबोध अंतः कारण के आयतन को विस्तार देता है।

प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता :–

प्रस्तुत शोध-कार्य में समकालीन रचनाकार राजेश जोशी के समग्र साहित्य को राजनितिक- सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृति विवेचना के द्वारा सौंदर्यबोध संबंधी निकषों को सामने लाने का प्रयास किया जाएगा। जनपक्षधर साहित्यकार के सौंदर्यबोध में सीमांत अस्मिताएँ कितना और किस रूप में स्थान पा सकती हैं? इसकी पड़ताल भी मेरे शोध में प्रेरक है। क्या सौंदर्यबोध की अवधारणाओं में जनतंत्रीकरण की आवश्यकता है? क्या एक समावेशी, सहिष्णु समाज के निर्माण के लिए पाठकीय चेतना में स्वस्थ सामाजिक मूल्यों के बीजारोपण में राजेश जोशी का साहित्य सहायक भूमिका निभाता है? मेरा प्रस्तावित शोध-विषय इन्हीं प्रश्नों के सहारे ऐसे ही अनेक संभावित प्रश्नों को संबोधित है।

प्रस्तावित शोध-विषय का महत्व :–

कविता को उसकी सौंदर्यबोध के कारण ही सभी ललित कलाओं में सर्वोच्च माना जाता है। राजेश जोशी की कविता में संवेदना शिल्प, समकालिन साहित्यरूप, नए प्रतिमान, कायिक सौंदर्य एवं मानसिक सौंदर्य तथा सौंदर्य चेतना के विविध आयामों की प्रासंगिकता है। इसलिए प्रस्तावित शोध-विषय का महत्व सौंदर्यबोध की दृष्टि से तात्कालिक एवं कालजयी है।

सामाजिक जीवन में व्याप्त हर विसंगति को काव्यात्मक अभिव्यक्ति द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत करना राजेश जोशी की विशिष्टता है। आम आदमी की पक्षधरता जोशी जी की कविता के सौंदर्यात्मक महत्व की कसौटि है। महत्व कविता के रूप, भाषा और कलात्मक रचना से संबंधि है।

पूर्वकृत शोध-कार्य :–

विभिन्न विश्वविद्यालयों को शोध-स्मारिका तथा शोध गंगा की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार शोध विषय से किसी-न-किसी रूप में संबंधित निम्न शोधकार्य हुए है।

1. सत्ता के आर-पार के दशको (1991-2011) की यथार्थ गाथा: राजेश जोशी को कविता, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2012
2. राजेश जोशी की कविताओं का आलोचनात्मक अध्ययन (प्रतिरोध की संस्कृति के विशेष संदर्भ), जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2005
3. राजेश जोशी कृत एक कवि की नोटबुक का आलोचनात्मक अध्ययन, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्याल, 2015
4. राजेश जोशी के काव्य में शिल्प और संवेदना, महर्षि दयानंद विश्वविधालय, 2014

उपरोक्त सूची से स्पष्ट है कि अभी तक राजेश जोशी के समग्र साहित्य का सौंदर्यबोध की दृष्टि से मूल्याकन नहीं हुआ है। इसलिए उनके समग्र साहित्य के द्वारा सौंदर्यबोध को पर एकाग्र मेरा शोध कार्य इस क्षेत्र में एक विनम्र प्रयास माना जाए।

प्रस्तावित शोध के आधार ग्रंथ :–

1. राजेश जोशी, नेपथ्य में हंसी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण (1994)
2. राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संकरण (2019)
3. राजेश जोशी, जिद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संखरण (2015)
4. राजेश जोशी, चांद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण (2013)
5. राजेश जोशी, एक कवि की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण (2006)

प्रस्तावित शोध-प्रारूप की परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध विषय के माध्यम से सौंदर्यबोध संबंधी साहित्यिक परिदृश्य को सामने का प्रयास किया जाएगा। यह जानना बहुत आवश्यक है कि समकालीन रचनाकार राजेश जोशी हिन्दी साहित्य के वृद्ध सौदर्यबोध संबंधी चिंतन में क्या नवीन जोड़ते है एवं इसके साथ आने वाले सभ्यता के अनिवार्य प्रश्नों से किस प्रकार संघर्ष करते है? यह रुपगत विशिष्टताओं के साथ ही साथ वस्तुगत विशिष्टिताओं को समझने के क्रम में सामाजिक-साहित्यिक संरचनाओं को रेखांकित करने का अवसर भी सम्भव हो सकेगा।

प्रस्तावित शोध प्रारूप को प्रविधि :–

शोध की आवश्यकतानुसार आगमन-निगमन पद्धति एवं समाजशास्त्रीय शोध-पद्धति का उपयोग किया जाएगा इसके साथ ही तुलनात्मक एवं साक्षात्कार पद्धति जा सकती है।

शोध अध्यायों का विभाजन :–

प्रथम अध्याय : साहित्य और सौंदर्यबोध का अंतः संबंध

1.1 संवेदना के संदर्भ में

1.2 शिल्प के संदर्भ में

द्वितीय अध्याय : समकालीन साहित्य में सौंदर्यबोध

2.1 समकालीन साहित्य रूप

2.2 सौंदर्यबोध के प्रतिमान

तृतीय अध्याय : राजेश जोशी के साहित्य में सौंदर्य चेतना

3.1 सौंदर्य चेतना के विविध रूप

3.2 सौंदर्य चेतना के आधार

चतुर्थ अधयाय : राजेश जोशी का सौंदर्य चेतना के विविध आयाम

4.1 कायिक सौंदर्य

4.2 मानसिक सौंदर्य

पंचम अध्याय : राजेश जोशी के साहित्य में सौंदर्य के अन्य आयाम

5.1 प्रकृति सौंदर्य

5.2 भाव सौंदर्य

षष्ठ अध्याय : उपसंहार

6.1 शोध के निष्कर्ष और मौलिक मान्यताएँ

6.2 प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध का महत्त्व

परिशिष्ट–

7.1 संदर्भ ग्रन्थों की सूची

7.2 पत्र-पत्रिकाओं की सूची

प्रस्तावित शोध ग्रंथों की सूची :–

1. अरविंदाक्ष, समकालीन हिन्दी कविता, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2018
2. परमानंद श्रीवास्तव, समकालीन कविता के नए प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. नंदकिशोर नवल, हिन्दी कविता, अभी बिल्कुल अभी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018
4. नीरज (संपादक), राजेश जोशीः स्वप्न और प्रतिरोध, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2011
5. गजानन माधव मुक्तिबोध, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008
6. अजय तिवारी, सौंदर्यशास्त्र के प्रश्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
7. पल्लव (संपादक), बनास जन का राजेश जोशी विशेषांक
8. मीमांसा और पुनर्मुल्यांकन- विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
9. समकालीन मार्क्सवाद विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
10. मार्क्सवादी साहित्य चिंतन इतिहास और सिद्धांत शिवकुमार मिश्र
11. साहित्य और सामाजिक सन्दर्भ- शिवकुमार मिश्र
12. आलोचना के प्रगतिशील आयाम शिवकुमार मिश्र
13. हिन्दी आलोचना विश्वनाथ त्रिपाठी
14. आलोचना की रचना यात्रा धनंजय वर्मा
15. हिन्दी आलोचना का विकास नंदकिशोर नवल
16. रचना का पक्ष नंदकिशोर नवल

17. साहित्य और इतहास दृष्टि मैनेजर पाण्डेय

18. शब्द और कर्म मैनेजर पाण्डेय

19. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका मैनेजर पाण्डेय

20. आलोचना की सामाजिकता मैनेजर पाण्डेय

21. अनभै सांचा मैनेजर पाण्डेय

22. साहित्य और जनसंघर्ष- शम्भुनाथ

23. दूसरा सौंदर्यशास्त्र क्यों? परमानंद श्रीवास्तव

24. नये साहित्य का तर्कशास्त्र विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

25. आलोचना के हाशिये विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

26. उपन्यास : स्वरुप और संवेदना राजेंद्र यादव

27. कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति राजेंद्र यादव

28. कहानी स्वरुप और संवेदना राजेंद्र यादव

29. रचना और आलोचना देवीशंकर अवस्थी

30. विवेक के रंग देवीशंकर अवस्थी

31. आलोचना और आलोचना देवीशंकर अवस्थी

32. रचना सुर आलोचना देवीशंकर अवस्थी

33. नई कहानी: सन्दर्भ और प्रकृति देवीशंकर अवस्थी

34. आलोचना का द्वन्द देवीशंकर अवस्थी

35. सौंदर्यशास्त्र के तत्व– कुमार विमल

36. कला विवेचन- कुमार विमल

37. हिन्दी साहित्य का इतिहास रामचंद्र शुक्ल

शोध निर्देशक

डॉ० मुन्ना साह
सहायक प्राचार्य
हिन्दी-विभाग,
मिल्लत महाविद्यालय, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञ :

नबी हुसैन
स्नातकोत्तर हिन्दी
पैट क्रमांक– E2209022
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा